लोगों में डर और बेचैनी

अब अगर फिर से भारतीयों को हिंसा की धमकी दी जा रही है तो विदेश मंत्रालय पहल करके यह सुनिश्चित कर सकता है कि पिछली बार जैसी गलतियां न दोहराई जाएं। इसमें सरकार और सिविल सोसाइटी की बड़ी भूमिका हो सकती है।

अंजु सिंह।।

दक्षिण अफ्रीका में पिछले महीने हिंसा और लूटपाट का शिकार हुआ भारतीय समुदाय एक बार फिर खुद को उन्हीं परिस्थितियों से घिरता महसूस कर रहा है। पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा की गिरफ्तारी को लेकर वहां के दो प्रांतों– क्वाजुलु नटाल और गौतेंग– में हुई हिंसा में कम से कम 330 लोग मारे गए थे, जिनमें भारतीय भी थे। तब लूटपाट में भारतीयों के होटलों, दुकानों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को भी निशाना बनाया गया था। यही वजह है कि हिंसा का वह दौर थमने के करीब एक महीने बाद जब दोबारा हिंसा भड़कने के आसार बनते दिखाई दे रहे हैं तो साउथ अफ्रीका में रहने वाले 13 लाख भारतीय समुदाय के लोगों में डर और बेचैनी है।

असल में, पिछले कुछ दिनों से वहां भारतीय समुदाय के लोगों को वॉट्सऐप संदेशों और विडियो के जरिए धमकाया जा रहा है। उनसे देश छोड़ने को कहा जा रहा है। नतीजतन, ओवरसीज सिटिजंस ऑफ इंडिया (ओसीआई) कार्ड के लिए आवेदन करने वालों की संख्या अचानक काफी बढ़ गई है, लेकिन इसमें भी दिक्कत आ रही है। वहां जो भारतीय रह रहे हैं, उनमें से ज्यादातर के पूर्वजों को 150 साल पहले अंग्रेज अपने खेतों में मजदूरी कराने ले गए थे। उस यात्रा के दस्तावेज अब शायद ही उनके पास हों। आरोप है कि ऐसी सूरत में ओसीआई कार्ड को लेकर दूतावास से बहुत मदद नहीं मिल रही।

अगर वाकई ऐसा है तो इस मामले में विदेश मंत्रालय को दखल देना चाहिए। उसे ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि ओसीआई कार्ड बनवाने में लोगों को कोई परेशानी न हो। इसके साथ उसे कुछ और बातों पर ध्यान देना होगा। पिछले महीने जूमा की गिरफ्तारी के बाद हिंसा को रोकने के लिए पहले तो दक्षिण अफ्रीकी सरकार ने समय रहते सेना को तैनात नहीं किया। दूसरी बात यह है कि हिंसा प्रभावित लोगों ने तब पुलिस और सेना पर सहयोग नहीं देने का भी आरोप लगाया था। अब अगर फिर से भारतीयों को हिंसा की धमकी दी जा रही है तो विदेश मंत्रालय पहल करके यह सुनिश्चित कर सकता है कि पिछली बार जैसी गलतियां न दोहराई जाएं। साउथ अफ्रीका सरकार ने पिछली बार यह स्पष्टीकरण दिया था कि हिंसा और लूटपाट की घटनाओं के पीछे अपराधी मानसिकता है, नस्लवादी सोच नहीं।

शायद यह बात ठीक हो, लेकिन अगर विभिन्न समुदायों के बीच दरार हिंसा तक पहुंच गई है तो इसके लिए इनके बीच की दूरियां मिटानी होंगी। इसमें सरकार और सिविल सोसाइटी की बड़ी भूमिका हो सकती है। इस संदर्भ में डरबन में रहने वाली महात्मा गांधी की पौत्री इला गांधी की पहल सराहनीय है। वह सभी समुदायों को साथ लेकर अमन की कोशिश कर रही हैं। लंबी अवधि में इस दरार को खत्म करने के लिए दक्षिण अफ्रीका की सरकार को अपने यहां की सामाजिक और आर्थिक गैर–बराबरी में कमी लाने की कोशिश करनी होगी।

सत्कार

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

स्वयंबर का निर्णय सुनकर योगी वहां से भाग निकला। राजकुमारी ने योगी का पीछा किया। आगे आगे योगी, उसके पीछे राजकुमारी और अंत में राजा श्यामसिंह। भागते भागते योगी और राजा घने जंगल में पहुंचे। कुछ दूर और पीछा करने के बाद राजकुमारी आगे न जा सकी। शीत ऋतु थी, धीरे धीरे पानी बरस रहा था, रात भी अंधेरी। आगे चलने का उचित समय न रहने के कारण राजा और योगी एक शाल्मली के वृक्ष के नीचे बैठ गए। उस पेड़ पर एक हंस और हंसिनी रहते थे। वे पूर्वजन्म में भी गृहस्थ थे। हंस हंसनि से बोला, "द्वार पर दो अतिथि आए हैं। उनका उचित सत्कार होना चाहिए। सबसे पहले इन लोगों को शीत से बचाने का उपक्रम करें क्योंकि आज ठंड बहुत ज्यादा है।" हंसिनी ने पेड़ से सूखी लकड़ियां गिरानी शुरू कर दीं।

संपादकीय

करो या मरो की स्थिति

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता कहते हैं कि इसका एकमात्र कारण यही है कि कांग्रेस अब कमजोर हो चुकी है और कमजोर का नेतृत्व कोई स्वीकार नहीं करता। यदि कांग्रेस मजबूत होती तो उसके पीछे चलने में तमाम राजनीतिक दल गौरवान्वित महसूस करते। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वह उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में यह साबित करे कि उसका जनाधार मजबूत हो रहा है। उसके लिए यह करो या मरो की लड़ाई है। यदि कांग्रेस अब अपने को मजबूत नहीं साबित करती तो विपक्षी दलों के बीच उसकी पूछ कमजोर पड़ेगी। कांग्रेस के नेता यह दावा करते रहते हैं कि देश में कांग्रेस के बिना मोदी विरोधी मोर्चा की कल्पना नहीं की जा सकती। फिर क्यों तमाम क्षेत्रीय दल उससे हाथ नहीं मिलाना चाहते? साफ है कि जमीनी सचाई कांग्रेस के इस दावे पर मुहर नहीं लगाती। बिहार और यूपी जैसी ही स्थिति अन्य राज्यों में भी है। दिल्ली में अरविंद केजरीवाल कांग्रेस का नेतृत्व स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। एनसीपी अध्यक्ष शरद पवार भले ही संकोच में कहते हों कि कांग्रेस के बिना मोदी विरोधी मोर्चा तैयार नहीं हो सकता, लेकिन उनकी सहयोगी शिवसेना कई बार दावा कर चुकी है कि जब तक शरद पवार मोर्चे का नेतृत्व नहीं करेंगे तब तक मोदी के खिलाफ कोई मजबूत मोर्चा तैयार नहीं हो सकता। तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी की भी कांग्रेस से उतनी ही दूरी है जितनी अन्य क्षेत्रीय दलों की। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव भी कांग्रेस का नेतृत्व स्वीकार कर लेंगे ऐसा कदापि नहीं लगता। उसकी आगे की राह और कठिन होगी। बीजेपी और नरेंद्र मोदी का विकल्प बनने के लिए तैयार बैठे कई बड़े क्षेत्रीय दलों के नेता अगर एक बार आगे बढ़ गए तो फिर कांग्रेस के लिए कोई गुंजाइश शायद ही बचे।

एक बार फिर कांग्रेस इसी दावे के साथ मैदान में उतरने जा रही है कि राज्य में उसकी पार्टी चमत्कार करने जा रही है। यह अलग बात है कि इस बार उसके खाते में कुछ काम भी हैं। लेकिन सांगठनिक दृष्टि से कांग्रेस के पास कुछ भी नहीं है।

कन्नी काटते दल

बृजेश शुक्ल।।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक में जब सोनिया गांधी अपनी ही पार्टी के नाराज नेताओं को चेतावनी दे रही थीं, तब शायद उन्हें भी इसका अहसास होगा कि विपक्षी दलों के अनेक नेता नेतृत्व का वह झंडा हथियाने की कोशिश में हैं, जिसे कांग्रेस अभी तक अपनी चीज मान कर चल रही है। यह विडंबना ही है कि कांग्रेस की सर्वोच्च नेता सोनिया गांधी को यह बताना पड़ जाए कि कांग्रेस की अध्यक्ष वही हैं। कांग्रेस जहां सत्ता में है, वहां उसके ही अलंबरदार यह जानते हुए भी आपस में दो–दो हाथ करने में लगे हैं कि पार्टी इस समय गंभीर संकट से गुजर रही है।

उत्तर प्रदेश में चुनावी बिगुल बज चुका है। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने कांग्रेस से दूरी बनाकर रणनीति साफ कर दी है। बीएसपी कांग्रेस के प्रति पहले से ही आक्रामक है। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में राज्य में बीजेपी और एसपी–बीएसपी –आरएलडी महागठबंधन के बीच सीधा मुकाबला देखने को मिला था। तब कांग्रेस अकेले ही मैदान में थी। लेकिन फिलहाल चुनावी परिदृश्य बदला लग रहा है।

समाजवादी पार्टी इस बार छोटे दलों से समझौता कर रही है। 2017 के विधानसभा चुनाव में

उसका कांग्रेस से गठबंधन था। यह विडंबना ही है कि एसपी और बीएसपी इस बार कांग्रेस जैसे राष्ट्रीय दल से दूरी बनाए हुए हैं। हालांकि असदुद्दीन ओवैसी से भी समझौता करने के लिए कई छोटे दल आगे आए हैं, लेकिन कांग्रेस को अभी तक कोई चुनावी साथी नहीं मिला है। कांग्रेस पार्टी की चमत्कारिक नेता मानी जाने वालीं प्रियंका गांधी के तमाम प्रयासों और लखीमपुर जैसे मुद्दे पर सर्वाधिक सक्रिय भूमिका निभाने के बावजूद बीजेपी विरोधी दलों की उससे दूरी राजनीति में दूरगामी असर के संकेत हैं। यह कहानी सिर्फ उत्तर प्रदेश की नहीं है। बिहार में भी राष्ट्रीय जनता दल कांग्रेस से अब परहेज कर रहा है। वास्तव में जब नरेंद्र मोदी के विकल्प की तलाश हो रही है और सभी दलों को एकजुट कर बीजेपी को हराने के प्रयास चल रहे हैं तब क्षेत्रीय दलों का यह रुख आने वाले दिनों की राजनीति की दिशा और दशा बता रहा है। ये वही दल हैं, जो दिल्ली से मोदी सरकार की विदाई तो चाहते हैं, लेकिन कांग्रेस से दूरी बनाए रखते हुए। उत्तर प्रदेश विधानसभा के चुनाव परिणाम केवल राज्य तक सीमित नहीं होंगे बल्कि यह तय कर देंगे कि मोदी विरोधी मोर्चा किसके हाथ में होगा।

कांग्रेस के उत्साह का एकमात्र कारण यह है कि प्रियंका गांधी उत्तर प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हो गई हैं। लेकिन क्या कांग्रेस उत्तर प्रदेश में अपना मजबूत आधार साबित कर मोदी विरोधी मोर्चे का नेतृत्व अपने हाथ रख पाएगी? वास्तव में कांग्रेस को चमत्कारों में जीने की आदत पड़ गई है। उसके कई नेता गांधी नेहरू परिवार के चमत्कारों की चर्चा करते नहीं थकते और आज भी इन्हीं कथित चमत्कारों के बल पर सफलता पाने के बड़े–बड़े दावे कर रहे हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव के कुछ पहले कांग्रेस के एक बड़े नेता से मुलाकात हुई तो बोले कि अब तो एसपी–बीएसपी–आरएलडी महागठबंधन की कोई हैसियत ही नहीं बची। 'ऐसा क्यों?' 'क्योंकि प्रियंका गांधी मैदान में उतर गई हैं। लोग उतावले हैं उन्हें वोट देने के लिए।'

सूडोकु नवताल-5237

सरल

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

सूडोकु नवताल -5236 का हल

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

अपना ब्लॉग

केंद्रीय और राज्य विधायिका द्वारा बनाए कानून

मोहन। बचपन में पढ़ी दो पंक्तियों की कविता अबतक याद रह गयी है जिसकी दूसरी पंक्ति फिर कभी। वर्तमान काल में देश के कानूनों में विभिन्न प्रकार के विषयों पर केंद्रीय और राज्य विधायिका द्वारा बनाए कानून, अलग–अलग धर्मों के कानून और न्यायालयों द्वारा परिभाषित, कार्यपालिका द्वारा अधिसूचनाओं या गजट से लागू किए गए असंख्य नियम कानून शामिल हैं। देश का संविधान विश्व का सबसे लम्बा संविधान है जिसमें 25 भाग, 448 धाराएँ और 12 अनुसूचियाँ हैं। आयकर अधिनियम करीब इतना ही लम्बा–चौड़ा है। किसी एक तारीख पर सभी कानूनों की सही दृ सही या निश्चित संख्या बताना कठिन है। फिर भी, विकीपीडिया में 'इंडियन नम्बर्ड एक्ट्स' के सन्दर्भ अनुसार जनवरी 2017 में देश में 1248 कानून थे। केंद्रीय और राज्य विधायिका द्वारा 1838 से लेकर अभीतक पारित 993 कानून हैं। इससे देश के नागरिकों पर पड़ने वाले मानसिक दबाव और अपीलीय अधिकरणों तथा अदालतों पर पड़नेवाले कार्यभार का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। इतने सारे असंख्य नियम–कानून तो जीवन दुश्वार करने के लिए काफी होंगे।